Day 17: क्या आप यीशु से इतना प्यार करेंगे कि जान भी जाए तो पीछे नहीं हटेंगे?

मत्ती **16:24** "तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह अपने आप का इन्कार करे, और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

"सामने क्रूस, पीछे संसार" की कहानी

"सामने क्रूस, पीछे संसार" का यह वाक्यांश साहस, विश्वास और त्याग की अद्भुत कहानी को समेटे हुए है। इसकी कहानी 19वीं शताब्दी में भारत के एक दूरदराज़ क्षेत्र में शुरू होती है। उस समय, पूर्वोत्तर भारत में असम के पास के एक गाँव में कुछ मिशनरी पहुँचे। उस समय वहां मसीह धर्म का प्रचार करना अत्यंत कठिन था, और इन मिशनरियों को स्थानीय लोगों के तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन उनमें से एक मिशनरी ने गाँव के एक व्यक्ति और उसके परिवार के साथ यीशु मसीह का संदेश दिया, जिसने बाद में इस संदेश को अपनाने का साहसिक निर्णय लिया।

यह परिवार एक छोटी गारो खासी आदिवासी जाति से संबंध रखता था जो मेघलाया में है, यह आसाम के बॉर्डर पे पड़ता है। यह परिवार उस क्षेत्र की परंपराओं का दृढ़ता से पालन करता था। इस गाँव के एक व्यक्ति और उसके परिवार ने यीशु मसीह के प्रेम और बलिदान की कहानी सुनी और उसका दिल इस संदेश से इतना प्रभावित हुआ कि उसने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया। हालाँकि, इस निर्णय से गाँव के लोगों में गुस्सा भर गया, क्योंकि वे इसे अपनी परंपराओं के विरुद्ध मानते थे। गाँव का मुखिया इस परिवार के सामने खड़ा हो गया और उनसे अपना धर्म छोड़ने और अपनी पुरानी परंपराओं में लौटने के लिए कहा।

अंतिम परीक्षा और एक निडर जवाब

मुखिया ने उन्हें धमकी दी कि यदि उन्होंने ईसा का त्याग नहीं किया, तो उन्हें और उनके परिवार को मौत की सजा दी जाएगी। लेकिन उस व्यक्ति का विश्वास अडिग था। उसने अपनी आंखों में विश्वास और अपने शब्दों में दृढ़ता के साथ कहा:

यीशु के पीछे मैं चलने लगा, न लौटूँगा, न लौटूँगा

इस पर मुखिया क्रोधित हो गया और उसके दो मासूम बेटों को उसी के सामने मार डाला। अपने बच्चों की मृत्यु का दुख उसके दिल में गहरा था, लेकिन उसका विश्वास फिर भी डगमगाया नहीं। मुखिया ने फिर कहा, "अब भी समय है, अपना विश्वास छोड़ दो। तुमने अपने बच्चों को खो दिया है, क्या तुम अपनी पत्नी को भी खोना चाहोगे?"

उस व्यक्ति ने दुःख भरी आँखों और अडिग विश्वास के साथ उत्तर दिया:

गर कोई मेरे साथ न आवे, न लौटूँगा, न लौटूँगा

मुखिया ने उसकी पत्नी को भी मार डाला। अब वह अकेला था, फिर भी उसका विश्वास अटल था। मुखिया ने उसे एक आखिरी मौका दिया और कहा, "अगर तुम अपना विश्वास छोड़ दोगे, तो हम तुम्हें जीवित छोड़ देंगे।" लेकिन उस व्यक्ति ने फिर से अपना दृढ़ निश्चय दोहराया। उसने आकाश की ओर देखा और पूरी निडरता के साथ कहा:

संसार को छोड़कर सलीब को लेकर मैं बढ़ूंगा मैं बढ़ूंगा

अगर मैं उसका इन्कार न करूँ ,ताज पाउँगा ताज पाउँगा

इसके बाद मुखिया ने उस व्यक्ति को भी मौत की सजा दे दी। इस प्रकार उस व्यक्ति ने ईसा मसीह के प्रति अपने प्रेम और विश्वास के कारण अपने पूरे परिवार के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी।

एक चमत्कार: मुखिया का हृदय परिवर्तन

इस घटना के बाद जो हुआ, उसने गाँव को हिला कर रख दिया। उस व्यक्ति का दृढ़ विश्वास और उसके अंतिम शब्दों की गूंज मुखिया के दिल में गहराई से बैठ गई। वह व्यक्ति क्यों इतना निडर था? उसे किसने इतनी शक्ति दी थी कि वह अपने परिवार की मृत्यु का भी सामना कर सके? उसके मन में यह सवाल उठता रहा।

कुछ समय बाद मुखिया के मन में एक परिवर्तन हुआ। उसने महसूस किया कि इस व्यक्ति के जीवन में कोई विशेष शक्ति थी, और यही सोचते हुए वह धीरे-धीरे ईसा मसीह के संदेश के प्रति जिज्ञासु हो गया। अंततः, मुखिया ने भी ईसा मसीह के प्रति अपना विश्वास प्रकट किया और ईसाई धर्म अपना लिया। धीरे-धीरे गाँव के अन्य लोगों ने भी ईसा मसीह के संदेश को स्वीकार किया और पूरे गाँव में परिवर्तन की एक लहर आ गई।

"सामने क्रूस, पीछे संसार" का संदेश और गीत

इस व्यक्ति की कहानी की गूँज भारत से बाहर भी फैल गई और यह एक प्रचलित भजन के रूप में बदल गई, जिसका नाम है "मैंने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय कर लिया है।" इस गीत के बोल उस व्यक्ति के अंतिम शब्दों से प्रेरित हैं:

यीशु के पीछे मैं चलने लगा (3)
न लौटूँगा (2)

गर कोई मेरे साथ न आवे (3)
न लौटूँगा (2)

संसार को छोड़कर सलीब को लेकर (3)
मैं बदऊंगा(2)

अगर मैं उसका इन्कार न करूँ (3)

ताज पाउँगा (2)

यह गीत आज भी चर्चों में गाया जाता है और यह विश्वासियों को इस साहसी व्यक्ति के दृढ़ निश्चय और विश्वास की याद दिलाता है।

इस कहानी का संदेश

"सामने क्रूस, पीछे संसार" का यह वाक्यांश उस व्यक्ति के अडिग विश्वास और साहस का प्रतीक है। क्रूस हमारे लिए ईसा मसीह के बलिदान का प्रतीक है, और "संसार पीछे" का अर्थ है कि हम इस संसार की भौतिकता, इच्छाओं और दबावों को त्यागकर ईसा मसीह के मार्ग पर चलें। यह कहानी हमें सिखाती है कि चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों, हमें अपने विश्वास के मार्ग पर दृढ़ रहना चाहिए, और अपने जीवन में ईसा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

इस अनाम शहीद की यह कहानी आज भी लोगों को प्रेरित करती है और विश्वासियों को सिखाती है कि क्रूस को अपने सामने रखें और संसार को पीछे छोड़ दें।

आज मेघालय में कितने विश्वासी हैं ?

- विशेषता: मेघालय में मसीही जनसंख्या का प्रतिशत लगभग **75%** है। यहाँ के खासी, गरो, और जैंतिया जनजातियाँ मुख्य रूप से मसीही धर्म को मानने वाली हैं।

लूका **14:26**
"यदि कोई मेरे पास आए**,** और अपने पिता और माता**,** पत्नी और लड़के**-**बालों**,** भाइयों और बहनों**,** वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने**,** तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।**"**